

# मूल्य शिक्षा से बनेगा नया भारत - राव

हमारा उद्देश्य केवल पढ़ाने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि एक अच्छा इंसान भी बनाना होना चाहिए। इसके लिए मूल्यों की शिक्षा को अपनाना अति आवश्यक है। यहाँ जो शिक्षा मुझे मिली है, वही शिक्षा यदि 18 वर्ष के बच्चों को मिल जाए तो हम एक नया भारत बना सकते हैं जहाँ हर कोई सुख, शांति और आनंद से जीवन व्यतीत कर सकेगा।

उक्त उद्गार गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्निकल स्टडीज़, उदयपुर के प्रिंसिपल डॉ. एम. वेणुगोपाल राव ने ब्रह्माकुमारीज़ शान्तिवन में आयोजित एमओयू कार्यक्रम में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज हम ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ एक नई दिशा में आगे बढ़ रहे हैं जहाँ हमारे कॉलेज के विद्यार्थी भी आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर पाएंगे।

गीतांजली इंस्टीट्यूट के डीन रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, राजीव माथुर ने कहा कि जीआईटीएस, उदयपुर एवं ब्रह्माकुमारीज़ के बीच में जो एमओयू किया गया है, वह अध्यात्म और शिक्षा का संगम है। आज का युग चुनौती का युग है जो हमें मूल्य परक शिक्षा को आगे ले जाने से रोक रही है। लेकिन हमने ब्रह्माकुमारी संस्था के सहयोग से इस दिशा में कदम आगे बढ़ाए हैं। हमने एक थॉट लैब खोलने का संकल्प लिया है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी अपने संकल्पों के प्रभाव का अध्ययन कर सकेगा।

फाइनेंस कंट्रोलर बाबूलाल जांगीर ने कहा कि आध्यात्मिक मूल्य की शिक्षा को शुरू करने का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों को असामाजिक गतिविधियों की तरफ बढ़ने से रोका जाए और ऐसा हम वैल्यूज की शिक्षा द्वारा ही कर पाएंगे।

ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान सरोवर की निदेशिका, ब्र.कु. डॉ. निर्मला ने कहा कि हमारी जो प्राचीन शिक्षा की पद्धति थी उसमें स्टूडेंट का गुरु के प्रति बहुत ही सम्मान रहता था लेकिन आज की शिक्षा हमें वह संस्कार व मूल्य देने में असफल रही है। धर्म और शिक्षा को अलग कर देने के कारण ही आज हमारे देश की यह स्थिति हुई है। हमें पुनः अपने उस गौरव को प्राप्त करने के लिए मूल्य शिक्षा को अपनाना होगा। अच्छी बातें हर कोई जानता है लेकिन स्व का ज्ञान न होने के कारण वह इसे जीवन में अपना नहीं पाता है।

शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि मूल्य हमें सिम्पल रहकर रॉयल बनने की प्रेरणा देता है। आज कोई भी विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जिसमें अवगुणों को जीतने की शिक्षा दी जाती हो। समाज में फैली हुई बुराइयों को हम मूल्य शिक्षा को जीवन में अपनाकर ही दूर कर सकते हैं।

उदयपुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्र.कु. रीटा बहन ने कहा कि यहाँ सिर्फ वैल्यूज की शिक्षा ही नहीं दी जाती है बल्कि इसके साथ ही दीक्षा भी दी जाती है। जब शिक्षक स्वयं में वैल्यूज को धारण करेगा तो स्टूडेंट उसके वैल्यूज को देखकर ही ग्रहण कर लेगा।

ब्र.कु. राजेश ने कहा कि राजयोग एक ऐसी शिक्षा है जिसके द्वारा हम अपने अंदर सुख, शांति एवं आनंद की अनुभूति कर सकते हैं।

मंच का कुशल संचालन ब्र.कु. मुकेश ने किया। कार्यक्रम के अंत में आमंत्रित अतिथियों को शॉल व मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया गया। इससे पूर्व मधुर वाणी ग्रुप ने 'शिक्षा की नई दिशा में आगे कदम बढ़ाए...' गीत गाकर सभी को उमंग-उत्साह व एक नई प्रेरणा से भर दिया।